संपादकीय

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी....

इस वर्ष पूरे भारतवर्ष में आज़ादी का अमृत महोत्सव मानाया जा रहा है। भारत का हर नागरिक अपने तईं देश के प्रति अपने प्रेम, अपनी निष्ठा, अपनी भक्ति और संवेदना को अभिव्यक्त एवं उजागर कर रहा है। यह आयोजन वास्तव में हमारी मातृभूमि की नियति को आकार देने के हमारे सामुहिक संकल्प और दृढ़ विश्वास पर केंद्रित है। आज़ादी का अमृत महोत्सव गत 75 वर्षों की हमारे देश की प्रगति का उत्सव है। यह उत्सव हमें अपनी छिपी ताकत को फिर से खोजने के लिए प्रेरित करता है और अपना उन्नत स्थान हासिल करने के लिए ईमानदार और सहक्रियात्मक कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करता है।

हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने संबोधन में कहा था कि, "जब हम गुलामी के उस दौर की कल्पना करते हैं, जहाँ करोड़ो करोड़ लोगों ने सदियों तक आज़ादी की सुबह का इंतज़ार किया, तब ये अहसास और बढ़ता है कि आज़ादी के 75 साल का अवसर कितना ऐतिहासिक है, कितना गौरवाशाली है। इस पर्व में शाश्वत भारत की परंपरा भी है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है और आज़ाद भारत की गौरवान्वित करनेवाली प्रगति भी है। यह महोत्सव राष्ट्र के जागरण का महोत्सव है, महोत्सव है वैश्विक शांति का और विकास का महोत्सव है।"

आज इस महोत्सव की आवश्यकता इसलिए भी है कि हम अपने इतिहास को याद करें, उन सपनों और आकांक्षाओं का स्मरण करें जो भारत के लोग अपने दिलों में लिए हुए हैं और भारत के निर्माण में जुट जाने का संकल्प ले। मेरी पीढ़ी के लोगों ने तो आज़ाद भारत में ही आँखें खोलीं। इसलिए संभवतः न आज़ादी का जश्न समझ पायी न गुलामी का दंश। किंतु आज़ादी की लड़ाई के दिल छूनेवाले और फक्र से सीना फूलाने वाले साहित्य ने आज़ादी के इतिहास को ह्रदयग्राही बना दिया। अनगिनत लोगों के संघर्ष, त्याग और बलिदान, उनके प्राणों की आहुति के कारण आज हम आज़ाद हवा में सांस ले रहे हैं.. यह हम भूल नहीं सकते। प्रत्येक देश का साहित्य अपने देश की विभिन्न परिस्थितियों से प्रभावित एवं प्रेरित होता है। साहित्यकार अपने देश के अतीत से प्राप्त विरासत पर गर्व करता है और भविष्य के लिए सुहावने सपने संजोता है अर्थात वह राष्ट्रीय आकांक्षाओं से परिचालित होता है।

राष्ट्रीयता राष्ट्र की प्रगति का मूलमंत्र है। भारत में राष्ट्रीयता की भावना का उदय आदिकालीन साहित्य से हुआ। केवल हिंदी ही नहीं बल्कि समस्त भारतीय साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना गर्मजोशी के साथ अभिव्यक्त हुई है। साहित्य के इतिहास में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक का साहित्य राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत है। परतंत्र भारत में आज़ादी का, राष्ट्र प्रेम का शंखनाद करनेवाले साहित्यकारों की रचनाओं से हिंदी साहित्य भरा पड़ा है। जिससे प्रभावित और प्रेरित होकर भारतीय जनता स्वतंत्रता की बलिवेदी पर मर मीटने के लिए तैयार थी। ऐसे ही वीरों के बलिदान पर आज भारत आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है।

राष्ट्रीयता का भाव वह प्रथम पायदान है जहाँ से मनुष्य अपने व्यक्तिगत स्वर्थों से ऊपर उठकर देश की उन्नत्ति, विकास और सुरक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने के लिए तैयार हो जाता है।

एक व्यक्ति जब तन-मन-धन से राष्ट्र के प्रति समर्पित होता है तभी राष्ट्रीयता की भावना का पोषण होता है। इसलिए भले ही कितने ही विदेश आक्रामकों ने भारत पर राज करना चाहा किंतु इस माटी की बात ही कुछ निराली है। इस मिट्टी में राष्ट्रीयता का ह्रदय धड़कता है। तभी तो इकबाल कह गए,

यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रूमा, सब मिट गए जहाँ से।
अब तक मगर है बाक़ी, नाम-ओ-निशाँ हमारा।।
कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन, दौर-ए-ज़माँ हमारा।।

"आखर" हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका का पाँचवा अंक आज आप सभी सुधि पाठकों के सम्मुख रखते समय हर्ष का अनुभव हो रहा है। कारण आखर परिवार ने आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में **हिंदी साहित्य में राष्ट्रियता** विषय पर विशेषांक निकाला है, जिससे हम भी आज़ादी के अमृत महोत्सव में अपनी गिलहरी की ही सही पर भूमिका निभा सके। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपका स्नेह और सहयोग हमें हमेशा मिलता रहे ताकि हम **'आखर'** के माध्यम से साहित्य की सेवा कर सकें।

इति नमस्कारन्ते!

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

(प्रधान संपादिका)